

गुरु नानक देव जी का प्रकाश परव

प्रलिस के लयि:

[राषट्रपति](#), [प्रकाश परव](#), [गुरु नानक देव](#), [सखि धरु](#), [लोदी प्रशासन](#), [नरिगुण शाखा](#), [कबीर दास](#), [सखि गुरु अरजुन](#), [गुरु अंगद](#), [भक्त आंदोलन](#), [करतारपुर कॉरडोर](#), [सवरुण मंदरि](#) ।

मेनुस के लयि:

गुरु नानक की शकिषाएँ और आज के वशि्व में उनकी प्रसंगकिता ।

[सरोत: पी.आई.बी](#)

चरुचा में क्यौं?

हाल ही में भारत के [राषट्रपति](#) ने [गुरु नानक देव जी के प्रकाश परव](#) की पूरव संध्या पर नागरकिों को बधाई दी तथा उनसे उनकी शकिषाओं को अपनाने तथा समाज में [एकता और समानता](#) को बढ़ावा देने का आग्रह कयिा ।

- प्रकाश परव [सखि धरु](#) के संस्थापक और [समाज सुधारक](#) गुरु नानक देव जी की जयंती पर मनाया जाता है ।
- इसे प्रकाश परव के रूप में इसलयि मनाया जाता है क्यौंकि उन्होंने लोगों को [अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयास कयिा था](#) ।

गुरु नानक देव के वशिष्य में मुख् तथ् क््या हैं?

- **जनुम और प्रारंभिक जीवन:** गुरु नानक (1469-1539) का जनुम वरुष 1469 में पाकसितान में लाहौर के पास [तलवंडी गाँव](#) में हुआ था ।
 - वह 10 [सखि गुरुओं](#) में से प्रथम थे ।
 - उन्होंने [लोदी प्रशासन](#) में सुलतानपुर में कलरुक के रूप में कारुय कयिा ।
- **आध्यात्मकि रहस्योदघाटन:** लगभग 30 वरुष की आयु में, गुरु नानक को एक गहन आध्यात्मकि अनुभव हुआ और [काली बेन](#) नदी के पास उनका ईश्वर से सीधा साक्षात्कार हुआ, जिसके कारण उन्होंने घोषणा की कि "न तो कोई हदि है और न ही कोई मुसलमान ।"
- **दारशनकि प्रेरणा:** वे [भक्त आंदोलन](#) की [नरिगुण शाखा](#) के समरुथक थे और [कबीर दास](#) से प्रभावति थे । उन्होंने "नाम जपना" जैसे आध्यात्मकि अभ्यासों पर जोर दयिा, यानी ईश्वर की उपस्थति का अनुभव करने के लयि ईश्वर के नाम का दोहराव ।
- **शकिषाएँ और यात्राएँ:** उन्होंने अपने मुसलमि साथी [मरदाना के साथ अपना संदेश फैलाते हुए पूरे भारत और मध्य पूरव में व्यापक रूप से यात्रा की](#) ।
 - उनके द्वारा रचति भजनों को [पाँचवें सखि गुरु अरजुन देव](#) ने वरुष 1604 में [आदिग्रंथ](#) में शामिल कयिा था ।
- **समुदाय और वरिसत:** वह [करतारपुर](#) में बस गए और [पहला सखि समुदाय स्थापति कयिा](#) जहाँ शशिष्य एक साथ रहते थे तथा पूजा करते थे ।
- उन्होंने समुदाय का नेतृत्व करने के लयि [गुरु अंगद \(भाई लहना\)](#) को अपना [उत्तराधिकारी नियुक्त कयिा](#) ।

भक्त आंदोलन

- भक्त आंदोलन ने मोकष प्राप्ति के लयि व्यक्तगित रूप से कलपति सर्वोच्च ईश्वर के प्रति [भक्तपूरुण समरुपण का समरुथन कयिा](#) ।
- **भक्ति की अवधारणा:** श्वेताश्वतर [उपनिषद](#) में भक्ति का अरुथ केवल कसी भी प्रयास में भागीदारी, समरुपण और प्रेम है ।
 - भगवद [गीता](#) ईश्वर में अटूट वशिवास रखने के महत्त्व पर बल देती है ।
- **उत्पत्ति:** भक्त आंदोलन [दक्षिण भारत में 7 वीं से 8 वीं शताब्दी](#) के दौरान [नयनारों](#) (शवि के भक्त) और [अलवारों](#) (वशिणु के भक्त) द्वारा शुरु हुआ ।

- यह आंदोलन दक्षिण भारत से उत्तर भारत तक फैल गया, जिसमें संतों द्वारा अपनी शक्तिशाली संघर्षण के लिये स्थानीय भाषाओं के प्रयोग से सहायता मिली।
- सामाजिक और धार्मिक सुधार: भक्तिसंतों ने जाति, वर्ग या धर्म की परवाह किये बिना सभी मनुष्यों की समानता का उपदेश दिया।
- प्रमुख भक्तिसंत: भक्तिसंतों से जुड़े संतों में रामदास, मीराबाई, तुलसीदास, नामदेव, तुकाराम, रामानुज, कबीर, नानक और अन्य शामिल हैं।
- कबीर और गुरु नानक ने हद्वि तथा इस्लामी दोनों परंपराओं से प्रेरणा लेकर हद्विओं व मुसलमानों के बीच की खाई को पाटने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गुरु नानक की शिक्षाएँ क्या हैं?

- एक ओंकार (एकेश्वरवाद): गुरु नानक ने इस बात पर बल दिया कि ईश्वर एक है जो सर्वव्यापी है और सभी मनुष्य उसी एक ईश्वर की संतान हैं।
- नाम जप (ईश्वर का नाम जपना): उन्होंने अंधकार को दूर करने, शांति और खुशी लाने तथा दया एवं प्रेम के मूल्यों को विकसित करने के लिए ईश्वर के नाम के स्मरण और जप करने को महत्त्व दिया।
- ईमानदारी से कार्य करना: गुरु नानक ने ईमानदारी से कार्य करने के साथ उचित साधनों के माध्यम से कमाई करने के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने ईमानदारी से किये गए कार्य को संतुष्टि की भावना और आत्मविश्वास का पूरक बताया।
- वंद छको (वतिरण और सेवा): उन्होंने सामाजिक समानता और करुणा को बढ़ावा देने के क्रम में अपनी आय के एक भाग को ज़रूरतमंदों के बीच बाँटने की प्रथा को महत्त्व दिया।
- अन्य धर्मों के प्रति दृष्टिकोण: गुरु नानक सभी धर्मों का सम्मान करते थे और मानते थे कि सभी मनुष्य समान हैं तथा वे धार्मिक मतभेदों के आधार पर नरिणय को अस्वीकार करते थे।
 - वेद, कुरान और बाइबल जैसे ग्रंथों की गहरी समझ के साथ उन्होंने प्रत्येक धर्म के प्रति समान सम्मान को महत्त्व दिया।
- मूर्तिपूजा: नानक ने मूर्तिपूजा को अस्वीकार किया। उनका मानना था कि भगवान को मूर्तियों में नहीं पाया जा सकता है। उन्होंने सखिया का भगवान अनंत है तथा वह मानवीय शब्दों, प्रतीकों या रूपों से परे हैं और उन्हें मानव नरिमति मूर्तियों द्वारा परभाषित नहीं किया जा सकता है।
 - गुरु नानक, भक्तिसंतों की नरिगुण ('नरिका ईश्वर') शाखा के मुख्य प्रस्तावक थे।
- मोक्ष: गुरु नानक का मानना था कि अच्छे कर्म आत्मा को शाश्वत आत्मा में विलीन होने में मदद करते हैं जबकि बुरे कर्म इसमें बाधा डालते हैं।
 - ईश्वर के नाम का ध्यान मोक्ष (जिसका अर्थ है पुनर्जन्म से मुक्ति और ईश्वर के साथ मलिन) की कुंजी है।
- भाईचारा और समानता: गुरु नानक ने जाति, धर्म या वर्ग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव का वरिोध किया।
 - वह सभी लोगों के बीच अंतरनहित समानता में विश्वास करते थे और उपदेश देते थे कि सभी को समान प्रेम और सम्मान मिलना चाहिये।
- भौतिकवाद से अलगव: उन्होंने भौतिक संपत्ति के प्रति आसक्ति के खिलाफ वकालत की तथा एक न्यायपूर्ण एवं आदर्श समाज के नरिमाण के क्रम में आध्यात्मिक विकास के साथ ईश्वर के प्रति समर्पण को प्रोत्साहन दिया।
- महिलाओं के प्रति सम्मान: गुरु नानक ने महिलाओं की समानता और सम्मान को बल देने के साथ उनकी गरिमा एवं उनके साथ समान व्यवहार का समर्थन किया।

गुरु नानक देव जी के अनमोल वचन

- यदि आप अपना मन शांत रख सकें तो आप दुनिया जीत लेंगे।
- केवल वही बोलें जिससे आपको सम्मान मिले।
- अपनी आय के दसवें हिस्से को दान करना चाहिये तथा अपने समय के दसवें हिस्से को ईश्वर की भक्ति में लगाना चाहिये।
- हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहें क्योंकि जब आप किसी की मदद करते हैं तो भगवान आपकी मदद करते हैं।
- केवल वही व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास कर सकता है जो स्वयं पर विश्वास है।

सखि गुरु और उनके प्रमुख योगदान		
गुरु	अवधि	प्रमुख योगदान
गुरु नानक देव	1469-1539	सखि धर्म के संस्थापक; गुरु का लंगर शुरू किया (सामुदायिक रसोई); बाबर के समकालीन; 550 वीं जयंती करतारपुर गलियारे के साथ मनाई गई।
गुरु अंगद	1504-1552	गुरु-मुखी लिपि का आविष्कार; गुरु का लंगर (सामुदायिक रसोई) की प्रथा को लोकप्रिय बनाया।
गुरु अमर दास	1479-1574	आनंद कारज विवाह की शुरुआत की, सती प्रथा और पर्व प्रथा को समाप्त किया, अकबर के समकालीन थे।
गुरु राम दास	1534-1581	वर्ष 1577 में अमृतसर की स्थापना की; स्वर्ण मंदिर का नरिमाण शुरू किया।
गुरु अर्जुन देव	1563-1606	वर्ष 1604 में आदिग्रंथ की रचना की; स्वर्ण मंदिर का नरिमाण पूरा किया गया; जहाँगीर द्वारा इसका नरिमाण कराया गया।
गुरु हरगोबदि	1594-1644	सखियों को एक सैन्य समुदाय में परिवर्तित किया; अकाल तखत (सखि धर्म की धार्मिक

		सत्ता का मुख्य केंद्र) की स्थापना की; जहाँगीर और शाहजहाँ के वरिद्ध संघर्ष कथि।
गुरु हर राय	1630-1661	औरंगजेब के साथ शांति को बढ़ावा दिया; धर्मप्रचार के कार्यों पर ध्यान केंद्रित कथि।
गुरु हरकशिन	1656-1664	सबसे युवा गुरु; इस्लाम वरिधी ईशानदि के संबंध में औरंगजेब द्वारा इन्हें अपने समक्ष उपस्थिति होने का आदेश दिया गया।
गुरु तेग बहादुर	1621-1675	आनंदपुर साहबि की स्थापना की।
गुरु गोबदि सहि	1666-1708	वर्ष 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की; इन्होंने एक नया संस्कार "पाहुल" (Pahul) शुरू कथि, ये मानव रूप में अंतमि सखि गुरु थे और इन्होंने 'गुरु ग्रंथ साहबि' को सखिों के गुरु के रूप में नामित कथि।

नषिकरष:

एकता, समानता और भक्तपिर केंद्रति गुरु नानक की शकिषाओं ने सखि धर्म एवं भक्तपिआंदोलन को गहराई से प्रभावति दिया। एकेशवरवाद, सभी धर्मों के प्रतिसममान एवं सामाजकि सुधारों से संबंधति उनके दृषटकिोण से लाखो लोग प्रेरति हुए हैं। शांति, प्रेम एवं सामाजकि न्याय को बढ़ावा देने पर केंद्रति गुरु नानक की शकिषाएँ आज भी परासंगकि है।

दृषटि मुखय परीकषा प्रश्न:

प्रश्न: गुरु नानक की प्रमुख शकिषाओं को बताते हुए समकालीन समाज में उनकी परासंगकिता पर चर्चा कीजयि।

UPSC सविलि सेवा परीकषा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

????????

प्रश्न. नमिनलखिति भक्तपिसंतों पर वचिर कीजयि: (2013)

1. दादू दयाल
2. गुरु नानक
3. त्यागराज

इनमें से कौन उस समय उपदेश देता था/देते थे जब लोदी वंश का पतन हुआ तथा बाबर सत्तारुढ़ हुआ?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 1 और 2

उत्तर: (b)

????

प्रश्न: भक्तपिसाहितय की प्रकृतपि एवं भारतीय संस्कृतपि में इसके योगदान का मूल्यांकन कीजयि। (2021)